विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -सप्तम दिनांक 27-05-2020

विषय -हिन्दी शिक्षक -पंकज सर

सुप्रभात बच्चों आज समर्पण कविता के अर्थ को स्पष्ट करेंगे।

पाठ 1 समर्पण

संकेत -माँ तुम्हारा ---------- और भी दूँ।

सन्दर्भ -यह। पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक कादम्बरी के समर्पण नामक पाठ से लिया गया है, जिसके रचयिता रामावतार त्यागी जी हैं।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्वदेश के प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हुए तन मन धन जीवन अर्थात सर्वस्व समर्पित करने के पश्चात भी कुछ और भेट चढ़ाने की इच्छा की है।

व्याख्या -कवि कहता है हे माँ! मैं दिन -दिन ऋण

से पूरी तरह दबा हुआ हूँ फिर भी यह निवेदन हैं की मै जब भी थाल में अपना सिर सजाकर तुम्हें समर्पित करने आऊ तुम दयाकर अवश्य स्वीकार कर लेना! मेरा गीत प्राण और एक एक रक्तबिन्दु तुम्हें समर्पित है फिर भी हे मेरे देश की पुण्य भूमि! मैं कुछ और भी न्योछावर करना चाहता हूँ।

संकेत -माँज दो ----------और भी हूँ।

सन्दर्भ -पूर्ववत्-

व्याख्या -कवि अनुरोध करता है हे माता! थोड़ा भी विलम्ब किए बिना मेरी तलवार की धार पैनी करे मुझे दे दो, मेरी पीठ पर ढाल बाँध दो, मेरे माथे पर अपने चरणों की धूलि का टीका लगा दो तथा सिर पर आशीष (आशीर्वाद) की घनी छाया कर दो!

मेरे सपने प्रश्न आयु का एक एक क्षण तुम्हें समर्पित है फिर भी मेरे देश की धरती! मैं तुम पर कुछ और न्योछावर करना चाहता हूँ।